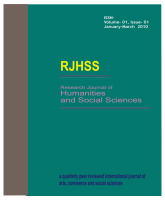

Research Journal of Humanities and Social Sciences (RJHSS)

ISSN 0975 - 6795

Volume 01, Issue 01, Jan.-March 2010

CONTENT

RESEARCH ARTICLE

- बिलासपुर नगर की कार्यशील महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता
  सरला भार्मा 01

मानवीय क्रियाओं में आर्थिक क्रियाओं का विषेश स्थान हैं, क्योंकि किसी क्षेत्र की जनसंख्या की आर्थिक संरचना उस क्षेत्र विषेश की जनांकिकी, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृश्ठभूमि का न केवल प्रतिबिंब है अपितु सामाजिक, आर्थिक विकास का आधार भी है । वर्तमान बदलते हुए परिवेश में तकनीकी एवं आर्थिक प्रगति तथा तीव्रगामी यातायात के साधनों से गांव एवं नगर की सामाजिक – आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में पर्याप्त विभिन्नताएं उत्पन्न हुई है, विशेषकर नगर एवं महानगरों में औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास से रोजगार की उपलब्धता में निरंतर वृद्धि हुई है, जिसने पुरूशों के साथ महिलाओं की भी क्रियाषीलता को प्रभावित किया है । इसें स्त्री शिक्षा के उत्कृश्ट परिणाम उभर कर आए हैं ।

सामान्यता, श्रमशक्ति संघटन, लिंग, आवास एवं आयु द्वारा परिवर्तनशील होता है । मेहता (1967) के अनुसार विष्व के अधिकांश समाजों में रोजी रोटी का दायित्व मुख्यतया पुरूशों पर होता है, इसीलिए विष्व के सभी देशों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूशों की संख्या श्रमशक्ति में अधिक है । तथापित वर्तमान परिवेश में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक महिलाओं की क्रियाशीलता में अब बाधक नहीं रहे । स्त्रियों की क्रियाशीलता, घर से बाहर जाने की स्वयत्रंता, आर्थिक आवष्यकताएं जो सभी कार्य को करने को मजबूर करती है, स्त्रियों के लिए उपयुक्त रोजगार की उपलब्धता तथा स्त्रियों की काम करने के प्रति इच्छा से प्रभावित होती है । परिणामतः स्त्रियों की उच्च स्तर की शिक्षा तथा कार्य के प्रति जागरूकता से नगर एवं महानगरों में पुरूश को महिलाओं के साथ रोजगार प्राप्त करने में जहां कड़ी–प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है वहीं, उनके समक्ष रोजगार एक चुनौती भी बनते जा रही है । तथापित महिलाओं की आर्थिक क्रियाशीलता से न केवल स्त्रियों की आत्मनिर्भरता को प्रश्रय मिला है, अपितु उनके परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति में भी सकारात्मक सुधार भी हुए हैं ।

- छत्तीसगढ़ में बेघर जनसंख्या
  अनुसुइया बघेल 05

प्रथम अध्ययन भारतीय जनगणना 2001 : छत्तीसगढ़ पर आधारित है। छत्तीसगढ़ में बेघर परिवारों में से तीन – चौथाई परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। किन्तु बेघर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में अधिक है। इसी तरह बेघर जनसंख्या में स्त्रियों से पुरूषों की संख्या अधिक है। छत्तीसगढ़ में बेघर जनसंख्या की दृष्टि से जांजगीर चांपा जिले का प्रथम स्थान है। बेघर जनसंख्या अनुसूचित जाति से अनुसूचित जनजाति में अधिक है। प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ की बेघर जनसंख्या में लिंग अनुपात, साक्षरता, व्यावसायिक संरचना की विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। बेघर जनसंख्या में साक्षरता सामान्य जनसंख्या से आधे से भी कम है किन्तु महिलाओं में साक्षरता सामान्य जनसंख्या की महिलाओं से एक – चौथाई से भी कम है। अधिक जनसंख्या के क्षेत्रों में बेघर जनसंख्या अधिक पाया गया है। बेघर जनसंख्या में सामान्य जनसंख्या के विपरीत कृषि श्रमिकों का प्रतिशत कम और गृह उद्योग तथा अन्य सेवाओं में संलग्न लोगों का प्रतिशत अधिक है। ईसाई प्रधान जिले जशपुर में संस्थागत जनसंख्या अधिक होने के कारण बेघर जनसंख्या कम है।

- महासमुंद जिले के कमारों की आर्थिक स्थिति एवं विकास प्राधिकरण के कमारों के साथ तुलनात्मक मानवशास्त्रीय अध्ययन
  रश्मि शर्मा एवं अशोक प्रधान 09

• रायपुर संभाग (छत्तीसगढ़) में अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों में प्रजननता
अनुसुइया बघेल 13

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़े रायपुर संभाग के 45 तहसीलों में से 111 गॉवों के 15 से 49 वर्ष उम्र (पुनरूत्पादन आयु वर्ग) की 3267 विवाहित महिलाओं से अनुसूची के आधार पर एकत्र की गई है। प्रस्तुत अध्ययन में रायपुर संभाग में अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों में प्रजननता स्तर, प्रजननता में भिन्नता, कारण और उनके निर्धारकों की व्याख्या की गई है। रायपुर संभाग के ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीय क्षेत्रों से प्रजननता अधिक है। नगरीय अधिवासों का प्रजननता को कम करने में प्रमुख भूमिका रही है। प्रति स्त्री बच्चों की संख्या अनुसूचित जाति और अन्य जनसंख्या दोनों से अनुसूचित जनजाति में कम है। प्रजननता को प्रभावित करने वाले जनांकिकीय, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण किया गया है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में प्रजननता में भिन्नता के लिए महिलाओं के विवाह की आयु और परिवार नियोजन की विधियों का उपयोग उत्तरदायी है। अनुसूचित जाति के महिलाओं के विवाह की आयु और परिवार नियोजन की विधियों का उपयोग अनुसूचित जनजाति में अधिक है। अध्ययन में बाल मर्त्यता दर, महिलाओं का शैक्षणिक स्तर एवं पारिवारिक आय भी प्रजननता के महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में पाया गया है।

• शिवनाथ बेसिन में मेहर जाति की सांस्कृतिक दशाएँ
ज़ेड. टी. खान एवं सी. आर. रात्रे 21

• छत्तीसगढ़ के चांपा जिले में कुटीर उद्योग एवं उनमें कार्यरत् श्रमिकों की आय एवं रोजगार का विश्लेषण (कोसा उद्योग के विषेश संदर्भ में)
अर्चना सेठी 24

कोसा उद्योग कृषि मूल का वन पर आधारित उद्योग है जो अधिकाशंतः हाथकरघा द्वारा संचालित होता है। कोसा उद्योग भारतीय ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंश है। कितना भी औद्योगिकीकरण क्यों न हों उससे हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर इस घरेलू उद्योग के विकास की संभावना व आवश्यकता को दूर नहीं किया जा सकता है। कम पूंजी निवेश, उत्पादन की सरल तकनीक, अधिक रोजगार, आर्थिक विकेन्द्रीकरण, गांवों की शहरों पर निर्भरता में कमी, कृषि कार्यों में लगे लोगों की बेरोजगारी का अंत, बेकार महिलाओं को काम, शहरों की ओर ग्रामों से पलायन पर स्वाभाविक प्रतिबंध, स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप उत्पादन, उपभोक्ता शोषण की कमी, श्रम सम्मान नियमित रोजगार, आय का समान वितरण, महाजन के शोषण से मुक्ति आदि समस्त विशेषतायें कोसा उद्योग जैसे कुटीर उद्योग में समाहित है।

• A Study of the Liturgical and Non-Liturgical Vestments worn by Catholic Christian Priests and Bishops.
Prabhjot Kaur and Ruby Joseph 30

From time immemorial ,Religion has effected clothing of its believers and leaders.Christianity is one of the most popular religion in the western world.Its followers are called Catholic Chistians,if they participate in all the sacraments,are obedient to discipline and government of the Church and have orthodox belief. This study is an attempt to make people aware of the political, religious and social heritage of clergy in form of vestments with particular reference to garments, ornaments, head dresses and foot wear. In the present study, data was collected by interview cum Questionnaire method. The sample was collected only from two diocese -Jalandhar and Shimla -Chandigarh almost covering whole Northern India.Data was analysed and coded.Findings of the study are that Vestments are basically of two types- liturgical and non liturgical. Clerical dress of Diocesian Priest and Bishop is Cassock and tunic. Bishop wears Alb, Stole, Cope, Pectoral cross, Mitre, Pastoral staff, Humeral veil , ring, sash, skull cap, chasuble, Black cassock with cape finished with scarlet piping, cincture etc depending on different occasion such as Mass ,Baptism, Confirmation,,Communion,Matrimony, Anointing, Liturgy of hours, Celebration of mysteries of the lord,Blessings and Funeral, while Priests wear Alb, cassock , Chasuble and stole. Six liturgical colours used for vestments are White, red, green, violet, black, rose and Gold which are used to give effective, outward expression to the specific character of the mysteries of the faith being celebrated to a sense of progress in the Christian life.To conclude,Liturgical Vestments express the nature of the occasion and to a certain extent define the respective role or rank of each participant.They add a symbolism and effectiveness in the communication pattern during worship reflecting concepts of majesty, mystery ,revelation ,incarnation ,sacrifice and communion.

KEY WORDS- Classification of Vestments, Accessories, Liturgical Colours, Celebration of Sacraments

- Spatial Evaluation of Land Utilization Patrapathra Village, Bilaspur District (C.G.)
  Uma Gole 37

- ग्राम जागरूकता में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका (ग्राम–नगपुरा, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में)
  मंजुलता साव 42

- जनसंख्या का आर्थिक विकास पर प्रभाव (छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में)
  बी. एल. सोनेकर एवं आर. के. ब्रम्हे 45

ADMINISTRATIVE, EDITORIAL, ADVERTISING AND SUBSCRIPTION OFFICE

A and V Publication, E-282 'Saikripa' Sector-4, Pt. Deendayal Upadhyay Nagar, Raipur 492010. (CG) India

Phone No. +919406051618. E. mail: editor.rjhss@gmail.com; Website: www.anvpublication.org